सामाज विकासमाला

हुआ सवेरा

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : ७८

हुआ सवेरा

एक शिक्षाप्रद नाटक

●

लेखक

ओंकारनाथ श्रीवास्तव

●

संपादक

यशपाल जैन

●

१९५७

सस्ता-साहित्य-मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९५७
मूल्य
छः आना

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो, तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

इस माला में तुमने कई कहानियां, संतों के चरित, महापुरुषों की जीवनियां, तीर्थों की यात्रा के विवरण आदि पढ़े हैं। इस किताब में एक नाटक दिया गया है, जो मिल-जुलकर काम करने की शिक्षा देता है। हमारा देश गांवों में बसता है। जरूरी है कि देश को आगे बढ़ाने के लिए सब लोग लगन और मेहनत से काम करें और मिल-जुलकर प्रेम से रहें।

यह नाटक मंच पर भी खेला जा सकता है।

आशा है, पाठक इसे पढ़ेंगे और मंच पर इसे खेलेंगे भी।

—संपादक

हुआ सवेरा

पात्र

रामकाका : किसान
रामकली : रामकाका की बेटी
छीटू : गांव के नाते रामकाका का भाई
नक्की महाराज : गांव का एक झगड़ालू आदमी
असली नाम पं० रामसेवक
बुधई : गांव के दलितवर्ग का एक व्यक्ति
मन्नीलाल : रामकाका का सगा छोटा भाई
बिहारीबाबू : ग्राम-सेवक

पहला दृश्य

(एक साधारण किसान की चौपाल । बीमार रामकाका चारपाई पर पड़े हैं। रामकली झुककर उनका बुख़ार देख रही है । तभी दरवाज़े पर दस्तक होती है)

छीटू--(खटखटाते हुए) **रामकाका, ओ रामकाका !**

रामकाका---अरी, देख रामकली, छीटू आया है।

रामकली---कहे देती हूं कि काका सो रहे हैं, नहीं तो बातें करके तुम्हारी तबीयत और भी खराब कर देंगे।

रामकाका---अरे, नहीं-नहीं, अंदर ले आना।

छीटू---(फिर से) रामकाका, ओ रामकाका, घर में हो?

रामकली---(अंदर से) आई, छीटू चाचा।

(दरवाजा खोलती है)

छीटू---(जल्दी में) रामकली बिटिया, रामकाका हैं?

रामकली---(धीरे से) हां हैं।

छीटू---क्या कर रहे हैं?

रामकली---सो रहे हैं।

छीटू---अरे, इतना दिन चढ़ आया, अभी सो ही रहे हैं!

रामकली---(फुसफुसाकर) चु...चु...चुप। धीरे बोलो, छीटू चाचा। बप्पा को बुखार चढ़ा है। जाग जायंगे।

रामकाका---(बीमार आवाज़ में) कौन? छीटू?

आ जाने दे, बिटिया। आओ भइया छीटू, अंदर निकल आओ।

छीटू--हां-हां, लाओ देखूं तो बात क्या है ?

(अंदर आते हैं)

छीटू--अरे रामकाका, यह क्या ! क्या हो गया है तुम्हें ? मुझे तो खबर भी नहीं हुई। कब से बीमार हो ? बच्चू तो कहता था कि कल तुम्हें खेत पर देखा था।

रामकाका--हां भैया, चारपाई पर तो आज ही पड़ा हूं ! (बोलते-बोलते सांस फूलने लगती है, खांसते हैं), पड़ूं तो कैसे ! इतना काम जो पड़ा है, आखिर कौन करेगा !

छीटू--मगर जान देने से क्या फ़ायदा ?

रामकाका--अरे भैया, आंखों के सामने कोई कबतक देख सकता है ! मन्नी की पतोहू रोज़ रात को खेत में से गेहूं काट ले जाती है और अपने बैलों को खिलाती है, सारा गांव जानता है। दो-एक दफा मना किया तो कहते हैं, कहीं के जानवर आकर चर गए होंगे ! अब बताओ छीटूभैया, न रखाऊं तो चैत में एक दाना भी हाथ में आयेगा ? (खांसते हैं)और कौन

सहारा है ? (जोर से खांसी आती है। रुक-रुककर बोलते हैं) मन्नी और मैं एक कोख के हैं। उसकी पतोहू मेरी भी तो पतोहू लगती है। कुछ कहते भी तो नहीं बनता, भैया !

छोटू--यह तो बड़े अंधेर की बात है, काका। बिटियां-बहुरियां चोरी करेंगी तो बड़ों-बड़ों का क्या

"तुम्हारी जगह मैं होऊं तो कुछ कर बैठूं"

हाल होगा ! काका, तुम तो सह लेते हो ! तुम्हारी जगह मैं होऊं तो कुछ कर बैठूं !

रामकाका--भैया, सहूं न तो क्या करूं। पेड़ तो एक ही है। एक डाल को बचाने के लिए दूसरी को

कैसे काट डालूं ? मन को समझा लेता हूं। (खांसता है) छोटूभैया, बूढ़ा हो गया हूं, पौरुष थक गया है, नहीं तो परवा क्या थी ! जैसे रात भर यहां पड़ा रहता हूं, वैसे ही खेत पर पड़ा रहता। मगर माह-पूस का कट-कटउवा जाड़ा, तिसपर आंख लगाने का भी सुभीता नहीं !

छोटू——काका, मड़ैया छवा दी जाय, कुछ ओढ़ना-बिछौना कहो तो मैं ही पहुंचा दिया करूं। कुछ पुवाल बचा है। मड़ैया में डलवा दूं ? घर सूना हो जायगा, नहीं तो मैं ही रह जाया करता !

रामकाका——नहीं भैया, तुम लोगों की दया से सब भगवान की किरपा है। मगर करूं क्या, एक खेत यहां है तो दूसरा वहां। चार बिसवा नहर के उस पार भी है। बप्पा जितना छोड़कर मरे थे, मन्नी ने अड़कर उसमें, हर खेत में, हिस्सा डलवा लिया। अब जहां-जहां उसके खेत हैं, वहां-वहां मेरे भी हैं। उसके पास आदमियों की कमी नहीं है, सब खेत रखाते हैं, और रखाने के बहाने पुरानी दुश्मनी निकालते हैं। (खांसते-खांसते थक जाते हैं) रात में कम-से-कम दो दफा तो नहर पार जाना ही पड़ता है।

छोटू——तो काका, कहें तो एकाध के हाथ-पैर

तोड़ दूं, सब ठीक हो जायगा उसी दिन से। हां, औरत पर हाथ नहीं उठाऊंगा, मगर एक दिन की चौकसी हमेशा के लिए झगड़ा खतम कर देगी।

रामकाका—झगड़ा करने से भी कहीं झगड़ा खतम होता है, छोटूभैया। फौजदारी, दावा नीलामी इसीमें तो हम गांववाले तबाह हुए हैं। रामकली की अम्मा के सारे गहने कचहरी खा गई। इसी सोच में तो वह मर गई बिचारी।(जोर से खांसी) अरे रामकली, ओ बिटिया, अपने छोटू चाचा को सुपारी नहीं खिलावेगी!

छोटू—झगड़े निबटाने का फिर उपाय क्या है, काका? न लड़ें, न फौजदारी करें, न कचहरी-अदालत जायं तो ये झगड़े कैसे निपटें। कहने से कोई मानता है, काका!"

रामकाका—नया खून है, भैया! आज के लड़के समझते नहीं कि ये लड़ाई-झगड़े कितने जानलेवा होते हैं। छोड़ो यह सब। और हालचाल सुनाओ, कोई नई खबर है?

छोटू—हां-हां, काका! मैं नई खबर ही लाया था। एक बिहारी बाबू गांव में आये हैं।

रामकाका—हां, सुना तो मैंने भी है।

छोटू—और भी कुछ सुना?

रामकाका——नहीं, और कुछ नहीं, मगर सब लोग उनके सुभाव की बहुत बड़ाई कर रहे थे। भैया, अच्छा आदमी मिल जाय तो पूरब जनम का पुण्य समझो। (खांसी उठती है)

छीटू——बड़ी-बड़ी बातें सुनी हैं, काका! मुझसे मिले भी थे। तुमसे भी जरूर मिलेंगे। कहते थे, गांव की सफाई करवायेंगे, दवा-दारू का इंतजाम करवायेंगे। गलियारा-लीकें साफ-पक्की करवायेंगे, कोपरेटिव खोलेंगे और काका सुना, कहते थे, यह सब गांववालों की मदद से करेंगे।

रामकाका——(जैसे दमे का मरीज कहता है) हूं-ऊं-ऊं!

छीटू——मगर काका, मैंने तो उनसे कह दिया——भैया, इन तिलों से तेल नहीं निकलेगा। इतनी सुबुद्धि हो तो गांववाले तर न जायं! कहते थे, सरकार ने गांवों की तरक्की का काम शुरू कर दिया है। सरकार की तरफ से वे आये हैं। मगर मुझे तो कुछ दाल में काला दिखाई पड़ता है।

रामकाका——नहीं, भैया! संदेह नहीं करना चाहिए। संदेह करना अपनी ही कमजोरी है। विश्वास करके देखो। उससे फायदा ही होता है। भैया, क्या

गांवों के भाग कभी नहीं जागेंगे ? कभी तो (खांसी) कभी तो (जोर से खांसी)।

छीटू--हां, यही सब सोचकर मैंने भी उनका साथ देने की हामी भर ली है, मगर नक्की महाराज वगैरा तो अभी से अगड़म-बगड़म बकने लगे हैं।

रामकाका--कौन नक्की महराज ? वही पंडित रामसेवक ?

छीटू--हां, तुम उन्हें समझते क्या हो, काका ! बड़ी शैतान की खोपड़ी है वह।

रामकाका--हूं-ऊं।

(रामकली चुपचाप आकर खड़ी हो जाती है)

छीटू--लाओ बिटिया, क्यों तमाखू है ? बोलती क्यों नहीं ?

रामकाका--क्या है री बिटिया, बोलती काहे नहीं ?

रामकली--(रुआंसी होकर) बोलती तो हूं, बप्पा !

रामकाका--अरे, तू रो रही है ! क्या बात है बिटिया ?

रामकली--बप्पा, मन्नी चाचा तुम्हें चोरी लगाते हैं। कहते हैं, तुम रात-रातभर वहां जागकर उनके

गेहूं काट लाते हो। कह रहे थे...

रामकाका--(दुखी होकर) देख रहे हो छीटू, तुम इस मनिया को ! बेईमान कहीं का ! मैं कहता हूं, भगवान सबकुछ देखता है। मैं बूढ़ा हुआ, मेहनत-मजूरी से अबतक कट गई। जो बची है, जैसे-तैसे काट लूंगा। तुम्हीं सोचो, मैं चोरी क्यों करूंगा, भैया। मुझे चोरी लगाता है ! बाल-बच्चेदार होकर भी इसे भगवान् का डर नहीं है। (जोर से खांसी आती है)

(दृश्य परिवर्तन)

दूसरा दृश्य

(गांव की गली। आगे-आगे नक्की महाराज, नंगे बदन पर जनेऊ, बड़ी भारी चुटिया, हाथ में एक सोंटा। पीछे शोर मचाते हुए लड़के)

लड़के--कहां गंए नक्कीं महरांज
दौंड़ों उनकों पकड़ों आंज
अंरे अंरे नक्की महरांज

(कुछ लड़के चिल्लाते हैं--"आये", "आये")

नक्की महाराज--क्यां शोंर मचां रखां हैं ? भांगों यहां से।

लड़के--हें-हें-हें !

नक्की महाराज--भागो, नहीं तो मार पड़ेगी, सीताराम, सीताराम ! देखा है यह डंडा।

लड़के--(भागते हैं) हें-हें-हें !

नक्की महाराज के पीछे शोर मचाते हुए बच्चे

नक्की महाराज--(बड़बड़ाते हुए) तंग आ गया मैं तो इन लड़कों से; जैसे कोई काम ही नहीं रह गया इन्हें।

छोटू--(दूर से) अरे रामसेवक महराज हैं ! पांय लागी पंडितजी।

नक्की महाराज--भगवान भला करें, कहो छोटू किधर चल दिये ?

छोटू--क्या बताऊं महराज, रामकाका के यहां से आ रहा हूं। मन्नीलाल ने तो उनका जिंदा रहना मुश्किल कर दिया है।

नक्की महाराज--अच्छां, कोंई नई बांत? जरां समझां के बताओं, भैया।

छोटू--बात यह है कि रामकाका ठहरे सीधे आदमी। मन्नीलाल ने दावा करके उनको तबाह कर डाला, मगर अब भी उन्हें चैन नहीं, यहांतक कि रातोंरात उनकी हरी खेती चरवा लेते हैं या कटवा ले जाते हैं। कहां की भलमनसी है यह। गांव में रहना है तो सुमति से रहना पड़ेगा।

नक्की महाराज--अंरे भांई, जिसकां खेंत न तांका जांयगा, उंसीको जानवर चंर डांलेंगें, इंसमें कौन नई बांत है? न मन्नी के जांनवर तो और किंसीकें सही। कहीं बंच संकता है?

छोटू--रखवाली पर भी तो बचाव नहीं है, महराज। रामकाका ने दो दिन रखवाली की तो मन्नीलाल ने उड़ा दिया कि रामकाका खुद उनके खेत से चारा काट लाते हैं। रामकाका-जैसे गऊ आदमी के लिए ऐसी बात! राम-राम!

नक्की महाराज--जिंसका नुकसांन होंगा वह

जंरूर कहेंगा, इंसमें गऊं आंदमी और बंछिया आंदमी से क्यां होंगा ।

छोटू--देखो नक्की महराज, तुम्हें आज से नहीं, लड़कपन से जानता हूं। लड़ाई करवाना तुम्हारा पेशा है, इसीकी कमाई खाते हो। आजकल मन्नीलाल के यहां लगे रहते हो, इसीसे तुम्हें आगाह किये देता हूं। रामकाका ने रोक न लिया होता तो अब-तक मन्नीलाल की अकल ठिकाने लगा दी होती! और तुम अपनी शैतानी नहीं छोड़ोगे तो तुम्हारी भी खबर ली जायगी। समझे।

(जाता है, दूसरी ओर से बुधई आता है)

नक्की महाराज--(अपने-आप) पींटेंगे बच्चू, अभीं पंडित रांमसेवक से पांला नहीं पड़ां हैं। बड़ां आयां वहां से रौंब जमानेवालां!...

बुधई--पांय लागी, महराज।

नक्की महाराज--कौन बुधंई! कहां से आं रहें हो?

बुधई--खेत पर से आ रहा हूं, महराज।

नक्की महाराज--किसके खेंत पंर से?

बुधई--मालिक के खेत पर से और किसके!

नक्की महाराज—ऐं सुंना तो थां कि तुम्हांरी अपनी जमीन भीं हों गई हैं।

बुधई—मेरा क्या है महराज, जो कुछ है भगवान का है, वही तो मालिक है।

नक्की महाराज—हूं तो मींठी-मींठी बातें करना बहुंत आं गयां है। कहो कि अंपने खेंत पर सें आं रहे हो। जां कहां रहें हों?

बुधई—मालिक ने बुलाया है।

नक्की महाराज—किसने, मन्नीलांल ने?

बुधई—जीहां, आप भी चलेंगे?

नक्की महाराज—जां-जां, मुझें यही कांम थोंड़ा है! तूं जां।

बुधई—अच्छा महराज, मैं तो चलूं, जै सीता राम!

(जाता है)

नक्की महाराज—(मुंह बनाकर) जैं सींताराम, हुंह, उंधर ग्रामसेवक के कहें पर चलना, इंधर मन्नीलांल की बैठक भी दांबना। चलो पंडित रामसेवक, नहीं तों यें ग्रामसेंवकजी सब गड़बड़घोटाला कर डालेंगे।

(दृश्य परिवर्तन)

तीसरा दृश्य

(मन्नीलाल की चौपाल)

मन्नीलाल---और कहो बुधई, तुमने तो हमारे यहां का काम ही छोड़ दिया, अब तो अपनी जमीन पर खेती करते हो।

बुधई---जमीन मेरी क्या है, मालिक, आप ही लोगों की है, हम तो ताबेदार हैं, जब जैसी जरूरत हो, हाजिर हैं।

मन्नीलाल---हां-हां, इसीलिए तो तुम्हें बुलाया है। देखो, मैं तुमपर बहुत भरोसा करता हूं।

बुधई---मालिक, इसमें कहने की कौन बात है ?

मन्नीलाल---अच्छा, रामदादा से मेरा जो मामला चलता रहा है उसे तो तुम जानते ही हो।

बुधई---हां, सरकार ! सारा गांव जानता है।

मन्नीलाल---और तुम यह भी जानते हो कि नहर के उस पारवाले खेत में उनका भी आधा हिस्सा हो गया है।

बुधई---हां, सरकार।

मन्नीलाल---तो वह खेत तो पूरा-का-पूरा अपने हाथ में रहना ही चाहिए। एक बार की फ़सल न

सही। सुनो...तुम चुपके से नहर काट दो, नई मेंड़ है, गलकर बह जायगी, तब हम पूरे खेत को अपना बता देंगे...फिर होने दो फौजदारी, हम तो उसके लिए हमेशा तैयार हैं।

बुधई——सरकार !

मन्नीलाल——एं ! क्या तुम्हें कुछ हिचक है ? लगता है, तुम भी छोटू की बंदरघुड़की में आ गये। अरे, चोरी मैंने थोड़े ही लगाई थी। वह तो नक्की महराज ने अपने-आप उड़ा दिया। मैंने कहा, अब उड़ा ही दिया तो चलने दो, नहीं तो मैं तो कहने-वालों में नहीं, कर गुजरनेवालों में से हूं।

बुधई——मगर सरकार...

मन्नीलाल——अगर-मगर कुछ नहीं। रामदादा के खेतों से मिले हुए तुम्हारे खेत भी तो हैं।

बुधई——हां सरकार, बड़े सरकार ने नहर के दोनों ओर के खेतों की पट्टियां मुझे माफ़ी दी थीं।

मन्नीलाल——तभी तो कहता हूं, तुम भी हाथ-दो हाथ जितना चाहो बढ़ा लेना, सबके लिए एक साथ ही लड़ लिया जायगा। नहर पारवाले में तुम्हारा भी गेहूं है, मेरा भी गेहूं, रामदादा का भी गेहूं... बस नहर काट दो, आधा तुम्हारा रहा (हँसकर) अरे

भाई, कुछ मुआविज़ा भी ले लेना, अब तो मुआविज़ा देने का रिवाज ही चल निकला है, हः, हः (हँसता है)।

बुधई——यह बात नहीं है, मालिक। छोटे मालिक से तबीयत बहुत घबराती है, आप तो उन्हें जानते ही हैं।

मन्नीलाल——कौन छिटवा ? हां-हां, उसका छोकड़ापन अभी तक नहीं गया, बंदर-घुड़कियां दिया करता है।

बुधई——मगर सरकार, इतनी मुश्किल से तो भाग जागे हैं, बिघाभर जमीन हाथ में आई है, कहीं अदालत में फंस गया तो वह भी निकल जायगी . . .।

मन्नीलाल——धत्तेरे की ! डरपोक कहीं का ! किसीने ठीक कहा है, कुत्ता नहलाने से बछड़ा नहीं बन जाता। अपनी जमीन होने पर भी ज़मींदार हो जाना सबके लिए मुश्किल है। जमीन तो लच्छिमी है, लच्छिमी। उसे तो बराबर बढ़ाते रहो तभी तक तुम्हारे पास रहेगी। हाथ पर हाथ धरकर बैठे नहीं कि बिस्वा-बिस्वा करके सारी गायब। खैर छोड़ो, यह बताओ नक्की महराज तो नहीं दिखाई पड़े ?

बुधई——रास्ते में मिले थे।

मन्नीलाल——और हां, तुमने अपनी ज़मीन गांव-

विकासवालों की खेती के लिए भी तो दी थी। कैसी खेती हो रही है उसपर, मैं तो उधर गया ही नहीं।

बुधई--अच्छी हुई है, मालिक (कुछ समझाने के ढंग से) लगती तो जोरदार है, वैसे कटने पर मालूम होगा।

मन्नीलाल--(ठंडी सांस लेकर) मुझसे भी कह रहे थे, मगर मैंने तो मना कर दिया। इसमें कुछ-न-कुछ पेंच तो होगा ही।

बुधई, नक्की और मन्नी

बुधई--पेंच की राम जाने! बिहारी बाबू हैं तो बड़े अच्छे और मिलनसार भी बहुत हैं।

मन्नीलाल—हां, सो तो हैं। दवा-दारू, नहर के पानी, कुओं की खुदाई, अच्छे बीजों का इंतज़ाम वगैरा तो सब ठीक है, मगर मैं कहता हूं कि भाई, यहींतक रहो, ज़मीन में हाथ न लगाओ। आगे की बात गड़बड़ है।

बुधई—नहीं मालिक, ज़मीन में हाथ वे नहीं लगायेंगे। बिहारीबाबू कहते थे कि वह तो रास्ता दिखाने भर के लिए हैं। अपने हाथ में कुछ न लेंगे। मेरी खेती को ही देखिए, जितनी ज्यादा फसल होगी सब मुझे ही तो मिलेगी।

मन्नीलाल—हो सकता है, तुम्हारी बात सही हो, मगर वह मेरे गले के नीचे नहीं उतरती।

(नक्की महाराज 'जै सीताराम' कहते हुए आते हैं)

मन्नीलाल—अरे आओ महाराज, बड़ी देर लगाई, पांय लागी।

नक्की महाराज—भगवान भला करें। हां, बुधई आ गए, अच्छा, बैठो-बैठो।

मन्नीलाल—महराज, बिहारीबाबू जो कुछ कर रहे हैं, उनके बारे में आपकी क्या राय है ?

नक्की महाराज—अरे, वही गांवसेवक (हँसकर) जबतक रामसेवक बने हैं, तबतक भइया गांवसेवक

की दाल नहीं गलने की, अरें सब जांल है, जांल। सुना नहीं तुमने, इनके बिहारीबाबू अंब चकबंदी करांने चले हैं, घंर-घंर लोगों को समझांते फिरते हैं कि अपनी जमीन फलाने को दें दों, फलाने कीं जमीन तुम लें लो, बड़ें-बड़ें खेत बनाओ. . .भला बतांओ, कोंई अपनी जमीन छोंड़ देंगा, मगर सुनां है, कुछ लोंग तैयार भी हो गये हैं।

मन्नीलाल---एं ! तो क्या उनका काम शुरू हो गया है ?

नक्की महाराज---अरें, पंडित रामसेवक को किस बांत की खंबर नहीं रहतीं। यह जो बुधइंया मींठी-मींठी बांतें कर रहां है, सबसे पहले तों यही रांजी हुआ थां....पूछिए न।

मन्नीलाल---(डांटकर) क्यों बे !

(बुधई सहमता है, सहसा पर्दा गिरता है)

चौथा दृश्य

(पहले दृश्य जैसी व्यवस्था। चारपाई पर बीमार रामकाका। ग्रामसेवक बिहारीबाबू रामकाका से बातें कर रहे हैं। रामकली भी मौजूद है।)

बिहारी---मगर रामकाका, मैंने बुधई को पहले

ही राज़ी कर लिया है। नहर के इस पार की उसकी पट्टी जितनी है, आपका नहर के उस पारवाला खेत उससे ज्यादा ही है। मन्नीलालजी नहीं तैयार होते तो न सही। आप इसी बात को मान लें तो आपकी आधी हो जायगी।

रामकाका––बिहारीबाबू, तुम अभी नए-नए गांव में आये हो, पर मैं तुमको गांव का ही लड़का समझता हूं, तुम हमारे अच्छे के लिए कहोगे, मगर पुरखों की ज़मीन को मैं कैसे छोड़ दूं ?

बिहारी––रामकाका, तुम तो समझदार आदमी हो। पुरखों का ही तो सारा देश है, हम इसे ठीक से रखें, मिल-जुलकर रहें, तभी तो अपने पुरखों के लायक बनेंगे। धरती को अलग-अलग बांटकर सोचना भी क्या कोई अच्छी बात है। सोचो, जब इतने समझदार होते हुए तुम इस तरह झिझकोगे तो औरों का क्या हाल होगा।

रामकाका––हां बेटा, तुम्हारी बात समझ में तो आती है। अच्छा देखो, सोचूंगा, जो कुछ तुम कहोगे मुझे मंजूर होगा। (खांसी)

बिहारी––रामकाका, मेरी बात सब मानेंगे। जब सबके भले की बात है तो लोग क्यों इंकार करेंगे।

उन्हें मालूम होगा कि आप भी मेरे साथ हैं, तब तो मन्नीलालजी तक मान जायंगे। बस, आपका आशीर्वाद चाहिए।

रामकाका——मेरा आशीर्वाद ! अरे भैया, मैं तो पापी आदमी हूं, काया का बोझ ढो रहा हूं। तुम आशीर्वाद दो कि अब जल्दी चलाचली हो। (ज़ोर से खांसी आती है)।

बिहारी——बहन रामकली, देखो काका को दवाई समय पर ज़रूर पिला देना। इस दवा से वह ज़रूर अच्छे हो जायंगे और जब जैसी जरूरत हो मुझे कहला भेजना। कल सवेरे तो मैं खुद आऊंगा ही। अच्छा रामकाका, चलूं, देखूं कुछ और लोग राज़ी हो जायं तो और भी हिम्मत बंधे, राम-राम।

रामकाका——जाते हो बेटा ! राम-राम ! अरी रामकली, बिहारीबाबू को कुछ सुपारी, इलायची।

बिहारी——ठीक है रामकाका, फिर कभी सही। अभी तो चलूंगा। बहुत लोगों से मिलना है।

(जाता है)

रामकली——काका, बिहारीबाबू इतना काम करते हैं कि कोई हिसाब नहीं। इतनी-इतनी बातें सुननी पड़ती हैं उन्हें, मगर हिम्मत नहीं हारते।

रामकाका——बड़ा हिम्मतवाला लड़का है, बिटिया! भगवान् करे उसकी तपस्या पूरी हो। ऐं, यह शोर कैसा है!

(नेपथ्य से भीड़ के स्वर सुनाई पड़ते हैं)

एक स्वर——नहीं-नहीं, यह कैसे हो सकता है?

दूसरा स्वर——जाओ-जाओ, यह पट्टी किसी दूसरे को पढ़ाना।

नक्की महाराज का स्वर——धोंखा है, धोंखा, जांल है, जांल।

रामकली——वे ही सब बिहारीबाबू की राह में रोड़े अटकानेवाले लोग हैं।

रामकाका——आह बिटिया, बंद करदे दरवाज़ा, नहीं सुना जाता मुझसे यह सब। (रामकली दरवाज़ा बंद करती है, शोरगुल बंद हो जाता है।)

रामकाका——बत्ती बुझा दे, बिटिया। रात हो गई। अब सोऊंगा।

(रामकली बत्ती बुझाती है। मंच पर अंधियारा हो जाता है)

पांचवां दृश्य

(थोड़ी देर बाद धीरे-धीरे प्रकाश होता है, जैसे

सवेरा हो रहा हो। इसी बीच रामकाका की चौपाल-वाला दृश्य हट गया है। मंच खाली है । अचानक रोशनी फैलते ही एक ओर से कतार बांधकर गीत गानेवाले निकल आते हैं । गानेवालों में बिहारी सबसे आगे है ।)
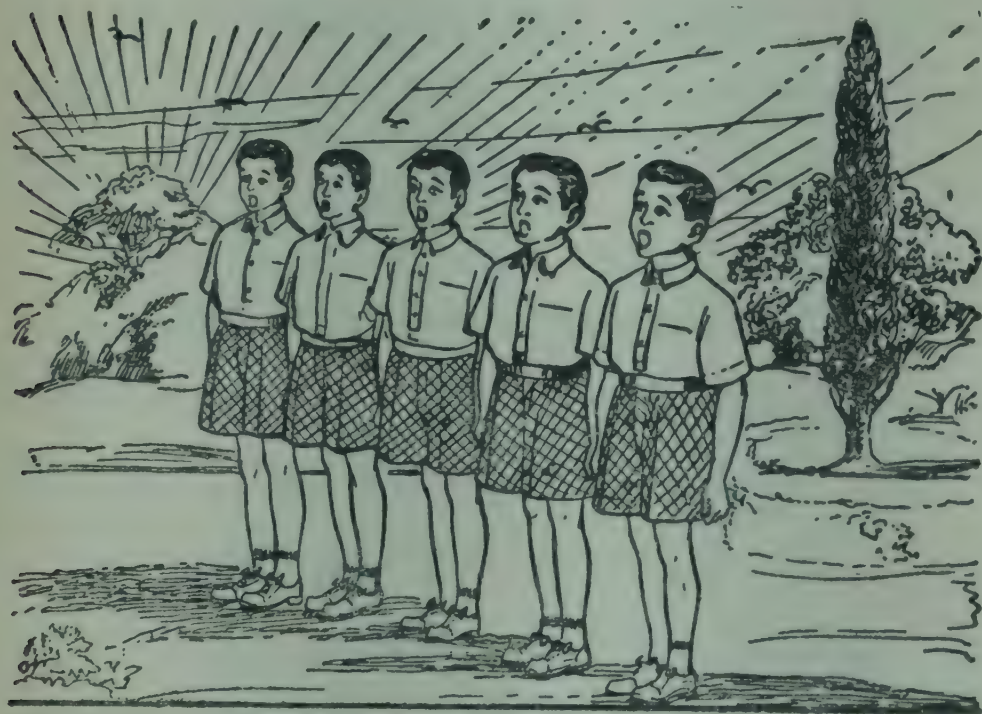
हो गया सबेरा अब तो
जाग जा रे भाई

बंजर और परती जागी
आंख खोल धरती जागी
फूल हो गई कलियां

महीं महाई,
जाग जा रे भाई

खरिकों पर गोरू जागे
पेड़ों पर पखेरू जागे
कूक उठी कोयलिया
धुनि पड़ी सुनाई
जाग जा रे भाई

जोत आसमानी जागी
भारत की बानी जागी
एक हो रही दुनिया
दे रही दिखाई
जाग जा रे भाई

छठा दृश्य

(गाना समाप्त होने पर मंच पर फिर से अंधेरा हो जाता है। उजाला होने पर वही रामकाका की चौपालवाला दृश्य सामने आता है। इस बीच दो महीने बीत गए हैं।)

बिहारी—सब आपका आशीर्वाद है, रामकाका। देखो, दो ही महीनों में गांवभर में कितनी सुमति हो गई है। लोग अपने पैरों पर खड़ा होना सीख गए हैं। चकबंदी करीब-करीब पूरी हो चुकी है। अगली फ़सल अब, भगवान की कसम, दूनी न हो तो कहना।

रामकाका—(अत्यंत रुग्ण स्वर में) तबतक जिया तो देखूंगा भैया। इस हाड़ों की ठठरी में अब क्या बचा है!

बिहारी—ऐसा न समझो, रामकाका, अब वे दिन गए जब लोग खांस-खांसकर बिस्तर पर मर जाते थे। मैं तुम्हें शहर ले चलूंगा और तुम्हारा इलाज कराऊंगा। मुंह-देखी बात नहीं कहता, काका, सचमुच तुम लाखों में एक हो। तुम्हें हम किन्हीं भी दामों बचा लेंगे।

रामकाका—बेटा, तुम उस जनम में मेरे कोई बड़े सगे-संबंधी रहे होगे। आदमी अपने के लिए भी इतना नहीं करता, जितना तुम मेरे लिए कर रहे हो।

(खांसी)

बिहारी—कैसी बात करते हो, काका, मैं तो तुम्हारे लड़के की तरह हूं। यह तो मेरा कर्तव्य है। मैं तो सेवक हूं।

रामकाका---कौन कहता है तुम सेवक हो, तुम तो भैया, देवता हो। तुमने हमें नई समझ दी है। तुमसे इस गांववाले कभी उरिन नहीं होंगे, कभी नहीं।

बिहारी---यह तो हमारा काम ही है, काका। लोगों को अपने पैरों पर खड़े होने की सलाह देना, उनको उन्हीं के अंदर छिपी हुई ताकतों का पता देना, यही हमारा काम है। अच्छा काका, एक खबर दूं, तुम खुश हो जाओगे।

रामकाका---कहो, बेटा।

बिहारी---आज मन्नीलालजी भी हमारी योजना में शामिल हो गए हैं। वह अपने किये पर पछतावा कर रहे थे। आज आपसे माफ़ी मांगने आ रहे हैं।

रामकाका---कौन, मन्नी! अरे, वह मेरा छोटा भाई है। उसका कैसा कुसूर!

मन्नीलाल---(सहसा प्रवेश करके, भर्राए गले से) रामदादा, मैं नहीं जानता था कि तुम्हारा दिल इतना बड़ा है कि मुझे माफ़ कर दोगे।

रामकाका---भैया, आओ। धन्यवाद दो भगवान

को कि उसने बिहारीबाबू-जैसा हीरा लड़का हमारे गांव में भेज दिया।

नवकी महाराज---मैं तो पहले ही कहता था कि बिहारी बाबू बड़े ही अच्छे आदमी हैं।

(पर्दा गिरता है)

●

समाज विकास - माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. निषाद और शबरी
११. गांव सुखी, हम सुखी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी - मानस - मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७, राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावंभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी - जीवन
७०. मूरखराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक

मूल्य प्रत्येक का छः आना

छः आना